स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री जी का भाषण

15 - अगस्त - 2004

मेरे प्यारे देशवासियो, भाइयो, बहनो और प्यारे बच्चो। आप सबको मैं स्वतंत्रता दिवस की बधाई देता हूँ।

इस दिन हम अपने तिरंगे को नमन करते हैं। नीले आसमान में इसे ऊंचा लहराते देखकर हमें खुशी और गर्व होता है। इस दिन हम स्वतंत्रता संग्राम के उन सिपाहियों को याद करके उनका आदर करते हैं जिन्होंने महात्मा गांधी जी के महान नेतृत्व में विदेशी शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और शानदार जीत हासिल की। इस दिन हम अपने जवानों तथा सुरक्षा बलों को उनकी बहादुरी और बलिदान के लिए धन्यवाद देते हैं। उनकी कर्तव्य-निष्ठा और अनुशासन के लिए अभिवादन करते हैं।

किसान, मजदूर, अध्यापक, व्यापारी, पेशेवर लोग, वैज्ञानिक और जन प्रतिनिधि, हम सभी अपने-अपने ढंग से, अपने-अपने तरीकों से प्यारे भारत के निर्माण के लिए काम करते हैं। यह भारत कैसा हो? एक ऐसा भारत जहां इन्साफ और इन्सानियत फले और फूले। एक ऐसा भारत जहां सभी नागरिक समान हों। एक ऐसा भारत जो खुशहाल हो। एक ऐसा भारत जहां अमन-चैन हो। एक ऐसा भारत जहां हर नागरिक पढ़ा-लिखा हो तथा सेहतमंद हो। एक ऐसा भारत जिसमें हर व्यक्ति को रोजगार मिले। एक ऐसा भारत जिसमें आम आदमी का भविष्य उज्ज्वल हो।

आज यहां आपके सामने खड़े होकर मुझे हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के शब्द याद आ रहे हैं। उन्होंने सन् 1948 में हमारी आजादी की पहली सालगिरह पर देश को सम्बोधित किया था। मैं उस समय एक नौजवान छात्र था। मुझे आजादी के उदय की किरणों में हमारे सपनों का भारत बनाने के नए अवसर दिखाई दे रहे थे। तब पंडित जी ने कहा था, 'हम सभी भारत के बारे में बातें करते हैं और भारत से कई चीजों की उम्मीद रखते हैं।' पंडित जी ने पूछा, 'लेकिन, इसके बदले हम भारत को क्या देते हैं?' और जवाब में उन्होंने कहा, 'जो प्यार हम भारत को देंगे, जो सेवा हम इसकी करेंगे और जो रचनात्मक काम हम इसके लिए करेंगे, वही हमें भारत से मिलेगा। जैसा हम बनेंगे वैसा ही भारत बनेगा, हमारे विचार और काम उसका स्वरूप तय करेंगे।'

मित्रो, मैं आप सभी से गुजारिश करता हूँ कि आप जब भी अपना रोजमर्रा का काम शुरू करें, चाहे वह खेतों में हो, कारखानों में हो, स्कूलों में हो, सरकारी दफ्तरों में हो, दुकानों में हो, Research laboratories में हो, तब पंडित जी के इन शब्दों को हमेशा याद करें। जो हम हैं वही हमारा देश है। जैसा हम अपने आप को बनाएंगे वैसा ही हमारा देश भी बनेगा।

भाइयो और बहनो

एक-एक ईंट से इमारत खड़ी होती है और लाखों ईंटों को जोड़कर एक बड़ी इमारत बनती है। ठीक इसी तरह, लाखों और करोड़ों लोगों के प्रयासों से एक राष्ट्र का निर्माण होता है । राष्ट्र निर्माण का कार्य एक रचनात्मक और उत्साह से भरा कार्य है। इसके लिए जरूरी है कि हम सभी अपने देश के प्रति आदर और प्यार से मिल-जुलकर काम करें। यह प्यार हमारे हिन्दुस्तानी होने के नाते उमड़ कर बाहर आता है। हमारा धर्म, प्रान्त, भाषा, जाति या संस्कृति कोई भी हो, हम सबसे पहले हिन्दुस्तानी हैं, और हिन्दुस्तान हमारा है।

विविधता में एकता ही हमारी ताकत है। धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय हमारे राष्ट्र के प्रतीक हैं। कानून की नज़र में सब की बराबरी हमारी पहचान है। आज का दिन हमारे लिए अपने आप को फिर से समर्पित करने का दिन है - देश की सेवा में, और हरेक नागरिक की सेवा में, खासकर जो उपेक्षित हैं।

यह दिन हमारे लिए बरसात के दिनों में आता है। हर साल जब हम यहां इकट्ठे होकर लालकिले पर तिरंगे को लहराते हुए देखते हैं, तो हमारी निगाहें आसमान की ओर उठती हैं। वे बादलों को देखती हैं कि कहीं बारिश तो नहीं आ रही। इस साल भी हम आसमान की ओर आस लगाकर देख रहे हैं।

मैं सूखे से पीड़ित किसानों की दिक्कतों को जानने के लिए आंध्र प्रदेश गया था। मैं उन परिवारों से भी मिला जिन्होंने कर्ज के भारी बोझ के कारण अपने रोजी-रोटी कमाने वालों को खो दिया। वहां मीलों तक मुझे पानी दिखाई नहीं दिया। मैं असम और बिहार गया और वहां उन लोगों की तकलीफों को देखा जिनका जीवन बाढ़ के कारण अस्त-व्यस्त हो गया था। वहां मुझे मीलों तक पानी ही पानी नजर आ रहा था।

भाइयो और बहनो

सूखा और बाढ़ - ये दो ऐसी मुसीबतें हैं जो आज भी हमारे लोगों को सता रही हैं। काफी लंबे अरसे से चली आ रही इन दिक्कतों से निपटने के लिए हमें मिलजुलकर कार्रवाई करने की जरूरत है।

हमारी सरकार ने इनसे निपटने के लिए कुछ कदम उठाए हैं। और इस दिशा में काफी कुछ करने का इरादा भी है। सूखे के प्रभाव से लोगों को बचाने के लिए हमें गांव-गांव में हल निकालने होंगे। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए लोगों को संगठित करना होगा। हम सिंचाई क्षेत्र में निवेश बढ़ाएंगे और हरेक नदी घाटी की विशेषताओं पर ध्यान देंगे। ऐसा करते समय पर्यावरण तथा लोगों की जरूरतों का ख्याल भी रखा जाएगा।

जल एक राष्ट्रीय संसाधन है और हमें देश के जल संसाधनों के इस्तेमाल के बारे में एक आम राय बनानी होगी। हमें यह तय करना होगा कि सीमित जल संसाधनों के इस्तेमाल में सबको उचित हिस्सा कैसे मिल पाए।

सदियों से भारतीय सभ्यता हमारी पवित्र नदियों के जल से फली और फूली है। ये नदियां धागों की तरह हैं जो हमारे राष्ट्र के ताने-बाने को बुनती हैं। हमें खास ख्याल रखना होगा कि इन नदियों के पानी के कारण हमारे बीच अलगाव पैदा न हो। मैं आपसे और सभी राजनेताओं से अनुरोध करता हूँ कि जल संसाधनों के प्रबंधन की चुनौती से निपटने के लिए एक राष्ट्रीय रूख नज़रिया अपनाएं।

पानी की समस्या से निपटना एक महत्वपूर्ण कार्य है, चाहे वह पीने के लिए हो या खेती के लिए। इसीलिए हमने इसे अपने **ग्रामीण इलाकों के लिए नई पहल** का एक हिस्सा बनाया है। सिंचाई के अलावा, हमने इस नई पहल में किसानों को आसानी से कर्ज मुहैया कराने के लिए भी कुछ कदम उठाए हैं। **नई पहल** के तहत ग्रामीण इलाकों में सिंचाई, कर्ज, बिजली, प्राथमिक शिक्षा, चिकित्सा सेवा, सड़कों का निर्माण, आदि बुनियादी ढांचे के विकास में निवेश करना आवश्यक है। इसके लिए हम जरूरी कदम उठाएंगे।

कृषि के विस्तार में Science & Technology अहम भूमिका है। सूखी जमीन पर खेती करने, फसल चक्र में बदलाव लाने, लघु सिंचाई और पशुधन में सुधार लाने के लिए हम Modern Science & Technology का अधिक से अधिक इस्तेमाल करेंगे। गांवों को सड़कों और दूर-संचार से जोड़ने तथा सूचना पहुंचाने में किसानों को बड़ा लाभ मिल सकता है। इसमें निजी क्षेत्र और समुदाय का सहयोग प्राप्त हो, तो सरकारी प्रयासों को और बढ़ावा मिल सकता है।

लगभग तीस साल पहले श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने **गरीबी हटाओ** का नारा दिया था। हमने गरीबी के प्रभाव को कम किया तो है, किन्तु इसे पूरी तरह से खत्म करने के लिए बहुत कुछ करना अभी बाकी है। हम अपनी अर्थव्यवस्था को आधुनिक और उदार बनाते हुए हर उद्यमी को फलने-फूलने का मौका देंगे। गरीबी हटाने के लिए यह रास्ता जरूरी है। लेकिन ऐसा करते समय हमें अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, पिछड़े वर्गों तथा अल्पसंख्यकों में खास दिक्कतों पर, तथा उनके अधिकारों पर, विशेष ध्यान देना होगा। आदिवासी इलाकों के विकास में उनकी जरूरतों तथा ख्वाहिशों का पूरा ध्यान रखना होगा।

महिलाओं को अधिकार-सम्पन्न बनाना एक ख़ास प्राथमिकता है और इसके लिए लड़कियों को पढ़ाना एक पहला कदम है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं। हमारी आर्थिक नीतियों में यह ख्याल रखना होगा कि बच्चों के अधिकारों पर कोई बुरा असर न पड़े तथा उन्हें फलने-फूलने के अधिक से अधिक अवसर मिले। हम बच्चों से संबंधित मौजूदा योजनाओं और कार्यक्रमों का विस्तार करेंगे तथा उन्हें नया रूप देंगे। हमें बच्चों के पोषण पर विशेष ध्यान देना होगा। सरकार की यह कोशिश होगी कि देश के सभी शिशुओं तथा बच्चों को सेहतमंद बनाने के लिए उन्हें अच्छा आहार तथा चिकित्सा सेवायें दी जायें।

देश में नौकरियों की जितनी मांग है, उसके हिसाब से रोजगार पैदा नहीं हो रहे हैं। सरकार विकास के दौर में इस कमी को दूर करने के लिए, ऐसे क्षेत्रों को बढ़ावा देगी जिसमें रोजगार मिलने की अधिक गुंजाइश है, जैसे छोटे और मझौले उद्यम, कृषि उद्योग,

तथा पर्यटन। गांवों में रोजगार उपलब्ध कराने की भी तत्काल जरूरत है, विशेषकर उन इलाकों में जो लम्बे अर्से से सूखे से प्रभावित हैं। इस चुनौती से निपटने के लिए **काम के लिए अनाज कार्यक्रम** हमारी रणनीति का एक अहम हिस्सा होगा। Infrastructure के क्षेत्र में नए निवेश करने से भी नए-नए रोजगार पैदा होंगे।

हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि अधिक तेजी से विकास हो और साथ ही इसका लाभ सभी लोगों को समान रूप से मिले। इसी रास्ते से बेरोजगारी तथा गरीबी दूर हो सकेगी। आर्थिक विकास तथा Modernization की हमारी नीतियों में सामाजिक न्याय, आपसी मेल-जोल, ग्रामीण विकास, प्रान्तीय संतुलन तथा पर्यावरण पर ध्यान देना चाहिए।

प्यारे देशवासियो,

हमने National Common Minimum Programme में से सात ऐसे सेक्टर चुने हैं जिन पर खास तौर से ध्यान दिया जाएगा। ये हैं - कृषि, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, शहरी इलाकों का सुधार तथा infrastructure, ये हमारे सात सूत्र हैं। ये सात सूत्र हमारे साझा कार्यक्रम के प्रमुख अंग है जिन पर शेष कार्यक्रमों की सफलता निर्भर करती है। कृषि, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार आम आदमी से जुड़े क्षेत्र हैं और इन्हीं की चिन्ता उन्हें रहती है। Infrastructure में बिजली, सड़क, रेल, बन्दरगाह तथा हवाई अड्डे शामिल हैं और इनके विकास पर ही देश का आर्थिक विकास निर्भर करता है। इन सूत्रों से संबंधित जो योजनाएं और प्राथमिकताएं हैं, उनकी चर्चा National Common Minimum Programme में और राष्ट्र के नाम मेरे पहले सम्बोधन में तथा वित्त मंत्री के हाल के बजट भाषण में, विस्तार से की गई है।

भाइयो और बहनो

आज मुझे कोई वायदे नहीं करने हैं, बल्कि वायदे निभाने हैं। मेरे लिए और केंद्र तथा राज्य सरकारों के लिए असली चुनौती हमारी घोषित नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने की है। लोगों के फायदे के लिए सरकार तरक्की का एक असरदार साधन बने, इसके लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारों, और स्थानीय निकायों को मिलकर काम करना होगा।

सरकार हर level पर विकास के लिए कोशिश कर रही है। लेकिन यदि सरकार को नतीजे देने हैं तो सरकार के काम करने के तरीके में सुधार लाना होगा। हमें अफसरों को अधिक जिम्मेदार बनाना होगा। सरकार में और ज्यादा खुलापन लाना होगा। हमें सरकारी उद्यमों को ज्यादा कुशल बनाना होगा। देश के नागरिक ऐसी सरकारें चाहते हैं, जो उनके प्रति जवाबदेह हो। वे सरकारी कामों में ईमानदारी और कुशलता चाहते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो,

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता के सवाल ने हमारे लोगों को बार-बार चिंतित किया है। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए हमने बार-बार संवैधानिक, कानूनी और प्रशासनिक तरीके ढूंढने की कोशिश भी की है। अब समय आ गया है जब हमें आम-सहमति से कुछ नियम बनाने होंगे। सभी राजनैतिक दलों के लिए एक आचार संहिता बनानी होगी। सार्वजनिक जीवन में सभी लोगों के लिए एक नैतिक संहिता बनानी होगी। सरकारी कामकाज के लिए बेहतरीन कार्य-प्रणाली लागू करनी होगी। इस अहम मौके पर हम सब मिलकर आम सहमति से इस तरह के नियम बनाने का संकल्प लें जिससे हमारे संविधान में निहित मूल्यों को कायम रखा जा सके।

हमें अपने भीतर और अपनी पार्टियों के भीतर भी झांकना होगा। अपने आप से पूछना होगा कि सार्वजनिक जीवन में नैतिक मूल्यों में आई इस गिरावट की असली वजह क्या है? हम अपनी सरकारी संस्थाओं, अपने राजनैतिक दलों और हर level पर सरकार में किस तरह सुधार ला सकते हैं? जब हमने पहले आर्थिक सुधार शुरू किए थे तो हमने व्यापारियों को नौकरशाही के शिकंजे से आजाद कराने की कोशिश की थी। हम निजी उद्यमों और निजी पहल को बढ़ावा देते रहेंगे।

लेकिन, हमारे जैसे विकासशील देशों में सच्चाई तो यह है कि सरकारों को भुलाया नहीं जा सकता, क्योंकि इन देशों में सरकार की अहम भूमिका होती है। आज आर्थिक सुधार में बड़ी चुनौती यह है कि सरकार में नई जान कैसे फूंकी जाये ताकि यह अपनी सही भूमिका निभा सके। आखिर सरकार क्या है? इसके अंग क्या हैं? जन-प्रतिनिधि और लोक सेवक ही सरकार के मुख्य अंग हैं। इसलिए सरकार में सुधार लाने का मतलब है - जन-प्रतिनिधियों तथा लोक सेवकों के कामकाज में सुधार लाना।

इसलिए, मेरे देशवासियो, एक नागरिक होने के नाते, आप भी इन सुधारों को लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

लोकतांत्रिक संस्थाओं को ज्यादा जवाबदेह बनाने के लिए, हम ग्राम पंचायतों और शहरी निकायों को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें इन लोकतांत्रिक संस्थाओं और उनके सदस्यों की कार्यकुशलता को बढ़ाना होगा। यह तभी संभव होगा जब हम उन्हें पैसा और कार्य प्रभावी ढंग से सौंप दें। अगर आज हम पंचायती राज को प्रभावी ढंग से इस्तेमाल में लाएं तो हम प्राथमिक शिक्षा, चिकित्सा सेवाएं, पीने का साफ पानी और सफाई जैसी बुनियादी सुविधाएं अधिक कारगर ढंग से मुहैया कर सकेंगे। जब हम सरकारी संस्थाओं में सुधार या पंचायती राज के बारे में बात करते हैं तो हमारा ध्यान श्री राजीव गांधी जी की ओर जाता है जिन्होंने इन दोनों क्षेत्रों में कई नए प्रयास किये थे।

लगभग 20 साल पहले **श्री राजीव गांधी जी** ने पहली बार देश का ध्यान उस समय नई उभर रही Electronics और Computer क्रान्ति की ओर खींचा था। जिस उमंग और उत्साह से हमारे देश के युवाओं ने IT revolution में हिस्सा लेकर भारत को **आई.टी. सुपर पावर** बना दिया है, उसका श्रेय राजीवजी की दूरदर्शिता को जाता है। आज यह संतोष की बात है कि हम Information Technology की मदद से दूर-दराज के

क्षेत्रों में भी आम आदमी के जीवन में सुधार ला पा रहे हैं। हम IT के बुनियादी ढांचें में जरूरी निवेश करेंगे। हम उन तरीकों का पता लगाते रहेंगे जिनसे आधुनिक टेक्नालॉजी आम आदमी का जीवन सुधार सकती है।

हम एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहां Science और Technology ताकत और दौलत के प्रमुख निर्धारक बन गए हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश 21वीं सदी में अपनी सही जगह हासिल करे तो यह बहुत जरूरी है कि हमें अपने सभी विकास कार्यों में Science और Technology को शामिल करना होगा। वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक राष्ट्रीय आन्दोलन चलाना होगा।

हम उच्च शिक्षा को नौकरशाही या किसी विचारधारा का कैदी नहीं बनने देंगे। इसे Professional excellence तथा Intellectual integrity बुनियादों पर खड़ा होना होगा। शिक्षा में excellence की चाह तथा सामाजिक समानता की भावना शामिल होनी चाहिए। आदरणीय Dr. Ambedkar जी ने उपेक्षित लोगों को अधिकार दिलाने में शिक्षा के महत्व को बहुत पहले ही समझ लिया था। डॉ0 अम्बेडकर का कहना था कि 'हम भौतिक लाभ तो छोड़ सकते हैं, किंतु हम उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार तथा अवसर नहीं छोड़ सकते ।'

मेरे प्यारे देशवासियो,

भारत एक विशाल देश है जिसके कई राज्य दुनिया के कई देशों से भी बड़े हैं। विकास का लाभ देश के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए, केंद्र और राज्यों को सहयोग की भावना से काम करना होगा। विकास सभी का साझा लक्ष्य है। इसे प्राप्त करने के लिए यह केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है कि वह राज्यों की मदद करे। लेकिन राज्य और स्थानीय सरकारों को भी इस दिशा में काफी कुछ करना होगा। विकास, सामाजिक न्याय और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए वे काफी कुछ कर सकती हैं। उन्हें अपनी क्षमता के अनुसार जरूरी संसाधन जुटाने होंगे। साथ ही यह जरूरी है कि वे शासन की गुणवत्ता और प्रभाव पर भी ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें।

मैं जितना समाज के उपेक्षित तबकों के बारे में चिंतित हूं, उतनी ही चिंता मुझे पिछड़े प्रान्तों की भी है। हम कम विकसित प्रांतों में नए निवेश को बढ़ावा देंगे। हम वहां विकास से जुड़ी संस्थाओं को मजबूत बनाने में मदद करेंगे। उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा जम्मू तथा कश्मीर में प्रशासन और विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता रहेगा। वहां विकास इस तरह से होना चाहिए जिससे कि रोजगार के नए अवसर पैदा हों ताकि इन प्रांतों के युवा नई आशा और विश्वास के साथ सुनहरे भविष्य की ओर देख सकें। ये प्रांत हमारे देश के बहुत ही सुन्दर प्रदेश हैं। यदि हम विकास एवं Tourism के लिए अनुकूल माहौल बनाने के लिए मिलकर काम करें तो ये प्रदेश ज्यादा खुशहाल बन सकते हैं। आर्थिक विकास के लिए शान्ति, सामाजिक और राजनीतिक स्थिरता, और आपसी मेल-मिलाप बहुत जरूरी है।

हमारी जनता चाहती है कि वह सुरक्षित एवं सामान्य जीवन जी सके, अपना कार्य कर सके और जीवन का आनन्द ले सके।

हमें उन सभी देश विरोधी तथा समाज विरोधी ताकतों का मुकाबला करना होगा जो आम जीवन में बाधा डालते हैं। चाहे वे आतंकवादी हों, Communal Forces हों, या ऐसी दूसरी विघटनकारी ताकतें हों। आतंकवाद हमारी आम जिन्दगी के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है और हमें संगठित होकर इससे लड़ना होगा। हिंसा से किसी भी समाज की प्रगति तथा उन्नति नहीं होती। हम इस खतरे का डटकर मुकाबला करेंगे। इसमें किसी को कोई शक नहीं होना चाहिए। लेकिन कोई भी Group हिंसा का रास्ता छोड़कर बातचीत करने के लिए राज़ी हो तो हम भी उनसे बातचीत करने के लिए तैयार हैं।

मित्रो,

हमारी अर्थ-व्यवस्था पिछले दस सालों से विश्व अर्थ-व्यवस्था से जुड़ती जा रही है। आज मैं चाहता हूं कि आप में से हरेक व्यक्ति नए बाजारों की खोज में और नए अवसरों का लाभ उठाने में वैसा ही आत्म-विश्वास दिखाए जैसा कि हमारे आजादी के सिपाहियों ने देश को आजाद करने में दिखाया था।

हमारा समाज एक खुला समाज रहा है। लेकिन विश्व के लिए अपना दरवाजे खोलते समय हमने अपनी पहचान नहीं खोई। मैं आपको फिर से गाँधी जी के शब्दों को याद दिलाना चाहता हूं। उनके अनुसार हमारा देश मजबूत नींव पर खड़े एक घर के समान होना चाहिए जिसकी खिड़कियां पूरी तरह खुली रहें ताकि इसके अन्दर हर तरफ से बेरोकटोक हवा आ सके। गाँधीजी ने कहा था 'मैं चाहता हूं कि हर दिशा से मेरे घर में हवा बहे, लेकिन इससे मेरे पाँव नहीं डगमगायें।' सदियों से विश्व के प्रति हमारा सांस्कृतिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण ऐसा ही रहा है। आज भी हमें एक ज्यादा आत्म-निर्भर और आधुनिक अर्थ-व्यवस्था का निर्माण करते हुए, ऐसा ही रुख अपनाना होगा। ऐसे दृष्टिकोण से ही विकास संभव होगा और आम जनता की दिक्कतें दूर होंगी।

हम अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाकर और अपने लोकतंत्र में सभी को शामिल करके दुनिया में अपना सिर ऊँचा करके चल सकते हैं। हम लोकतंत्र और विकास के प्रति जितने प्रतिबद्ध हैं उतने ही हम अपने पड़ौसी देशों और सारी दुनिया के साथ शान्ति के साथ रहने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमारा इतिहास इसका गवाह है। सदियों से हमने दुनिया के विभिन्न भागों से आने वाले यात्रियों और व्यापारियों का खुले दिल से स्वागत किया है। हम भी व्यापार की खोज में, और अपने दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए, दुनिया के दूर-दराज देशों में गए। ये सब प्रयास शान्तिपूर्वक किये गए। आज भी हम एक शान्त और खुशहाल पड़ौस में रहना चाहते हैं।

हमारी सेनाओं एवं सुरक्षा बलों को उनके कल्याण तथा Modernization के लिए हम भरपूर मदद देंगे। हमारी सेनाएं देश की अखण्डता की रक्षा करने में अहम भूमिका निभाती

हैं। वे केवल सरहद की ही सुरक्षा नहीं करतीं, बल्कि वे उन सभी जगहों पर पहुंचती हैं जहां आम आदमी को उनकी मदद की जरूरत होती है।

सुरक्षा के साथ-साथ, हमें विकास की ओर भी ध्यान देना होगा। हमारी तरह हमारे सभी पड़ौसी देश भी विकासशील देश हैं और हम सभी का लक्ष्य हमारे नागरिकों के जीवन-स्तर में सुधार लाना है। हम अपनी केवल सीमाओं से ही नहीं बंधे हैं बल्कि तकदीर से भी बंधे हैं। पड़ौस में शान्ति और खुशहाली लाना हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारी सरकार सभी पड़ौसी देशों के साथ गहरे राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक संबंध बनाने को खास तरह की तरजीह देगी।

हमने हमेशा यही चाहा कि पाकिस्तान के साथ सभी मसलों का हल बातचीत के ज़रिये निकाला जाए। पाकिस्तान के साथ चल रही संयुक्त बातचीत को हम निश्चित रूप से दृढ़ संकल्प और निष्ठा के साथ आगे बढ़ाएंगे। शांति कायम रखने के लिए आपस में विश्वास जरूरी है। ज़ाहिर है कि सीमा-पार आतंकवाद और खून-खराबे से यह काम ज्यादा कठिन और जटिल हो सकता है।

चीन के साथ हमारे सम्बंधों में आज जो अच्छे रुझान नज़र आ रहे हैं, उनकी शुरुआत 1988 में श्री राजीव गांधी जी की चीन यात्रा में की गई पहल से हुई थी। हम चीन के साथ आपसी सम्बंधों को मजबूत और अधिक गहरा बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सीमा के मसले को हल करने के लिए हम आपसी बातचीत को जारी रखेंगे।

हम छोटे-बड़े सभी देशों के साथ अपनी दोस्ती को महत्व देते हैं और सभी देशों के साथ गहरे आर्थिक संबंध बनाना चाहेंगें।

भाइयो और बहनो

100 करोड़ से ज्यादा की आबादी वाला लोकतांत्रिक देश होने के नाते, हमें विश्व मामलों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।

भारतवासियों ने ज्ञान की खोज़ में बहुत बड़ा योगदान दिया है। भारतीय मूल के लोगों द्वारा अन्य देशों में निभाई गई भूमिका की हम सराहना करते हैं। भारतीय मूल के लोग, जहां कहीं भी रहते हैं, हमारी संस्कृति के वो वाहक हैं। उनके योगदान को हम महत्व देते हैं - चाहे वो यहां हों या विदेशो में। वे हमारे 'ब्रेन बैंक ' हैं। उन्होंने दिखाया है, कि यदि अनुकूल माहौल मिले तो हम भारतीय लोग कितना बेहतरीन कार्य कर सकते हैं। उन्होंने यह दिखाया है कि यदि जरूरी बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया जाए और व्यक्तिगत प्रयासों को बढ़ावा दिया जाए तो भारतीय लोग विश्व में सबसे उत्तम बन सकते हैं।

हमारी सरकार के लिए भाइयो और बहनो यह एक बहुत बड़ी चुनौती है, कि वह देश में एक ऐसा माहौल बनाए, जहां योग्यता को मान्यता मिले, कड़ी मेहनत को फल मिले, और रचनात्मक कार्यों को श्रेय मिले।

मेरे प्यारे देशवासियो, भाइयो और बहनो,

हमारी सरकार को कई कदम उठाने होंगे जिनसे आपकी जरूरतें और ख्वाहिशें पूरी हो सकें। यह एक ऐसी जिम्मेदारी है, जिसके लिए हम आपके प्रति जवाबदेह हैं, और इस जिम्मेदारी को निभाना हमारा कर्त्तव्य है। प्रजातंत्र का यही निचोड़ है, और इसे मैं नम्रता सहित स्वीकार करता हूं। सरकार की ताकत से जनता की ताकत बहुत अधिक है और दोनों ताकतों को मिलाने से एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। सरकार कितना कर सकती है, इसकी भी कुछ सीमाएं हैं। इन समस्याओं का कुछ समाधान हम सब में, हमारे परिवारों में, और हमारे समुदायों में निहित है। यदि हम एक समुदाय के रूप में, एक दूसरे को सहयोग दें, और मिलकर काम करें तो हम सरकार की मदद का इन्तजार किए बिना, भी काफी कुछ कर सकते हैं। हमें सामुदायिक सेवा और राष्ट्रीयता की भावना को फिर से जीवित करना है, खासकर अपने नौजवानों में ।

हमारा स्वतंत्रता आन्दोलन विश्व के इतिहास में अनोखा था, क्योंकि हमने अहिंसा के ज़रिए, आम आदमी के मन में उम्मीद की किरण जगाकर, आज़ादी हासिल की थी। आज भी देश की युवा पीढ़ी महात्मा गाँधी से प्रेरणा लेती है, जिन्होंने एक ताकतवर ब्रिटिश शासन की नींव हिलाकर रख दी थी। मैं चाहता हूँ कि हमारे युवा महात्मा गांधी जी के संदेश को ठीक तरह से समझें। यदि मन में पक्का इरादा हो, तो हम सबके पास देश की तस्वीर और तक़दीर बदलने की ताकत है।

भाइयो और बहनो, आइये, हम आजादी की लड़ाई के उन मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए मिलकर काम करें, जिनकी आज देश को सख्त जरूरत है - आदर्शवाद, आत्म-बलिदान, अनुशासन और दृढ़ संकल्प। यही एकमात्र रास्ता है, जिससे भारत विश्व के देशों में, अपना अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकेगा। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए इस महान देश की जनता के पास जरूरी इच्छा-शक्ति, पक्का इरादा और साधन मौजूद हैं।

भारत की तकदीर हमें पुकार रही है कि हम अपने सम्पूर्ण ज्ञान, अनुभव और विवेक का मिलजुलकर उपयोग करें जिससे उज्ज्वल भविष्य का यह सपना साकार हो सके। मुझे पूरा यकीन है कि हम इसमें जरूर कामयाब होंगे।

प्यारे बच्चो, अब मेरे साथ मिलकर बोलें - **जय हिन्द! जय हिन्द! जय हिन्द!**